छत पर बना घर

सुकोट कथा

लेखनः डेविड आर. एडलर

चित्रः मैरिलिन हिर्श

भाषान्तर पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



सुकोट पतझड़ में आने वाली फसल का त्यौहार है। कई मायनों में यह पृथ्वी द्वारा दिए गए दान का उत्सव है, जिसे अनेक संस्कृतियों में अलग-अलग तरह से मनाया जाता है। इसे सुकोट या सोक्का का त्यौहार भी कहते हैं। यह हमें उस समय की याद दिलाता है जब यहूदियों को मिस्र से भगाया गया था। उस समय आगे की यात्रा करते हुए वे अस्थायी आसरे बनाया करते थे सुकोट का अर्थ इस त्यौहार और अस्थायी आवास दोनों से है। ये आवास दरअसल झोंपडियाँ होती थीं जिनकी छत का कुछ हिस्सा आकाश की ओर खुला होता था।

छत पर बना घर

सुकोट कथा

छत पर बना घर

सुकोट कथा



लेखनः डेविड आर. एडलर

चित्रः मैरिलिन हिर्श

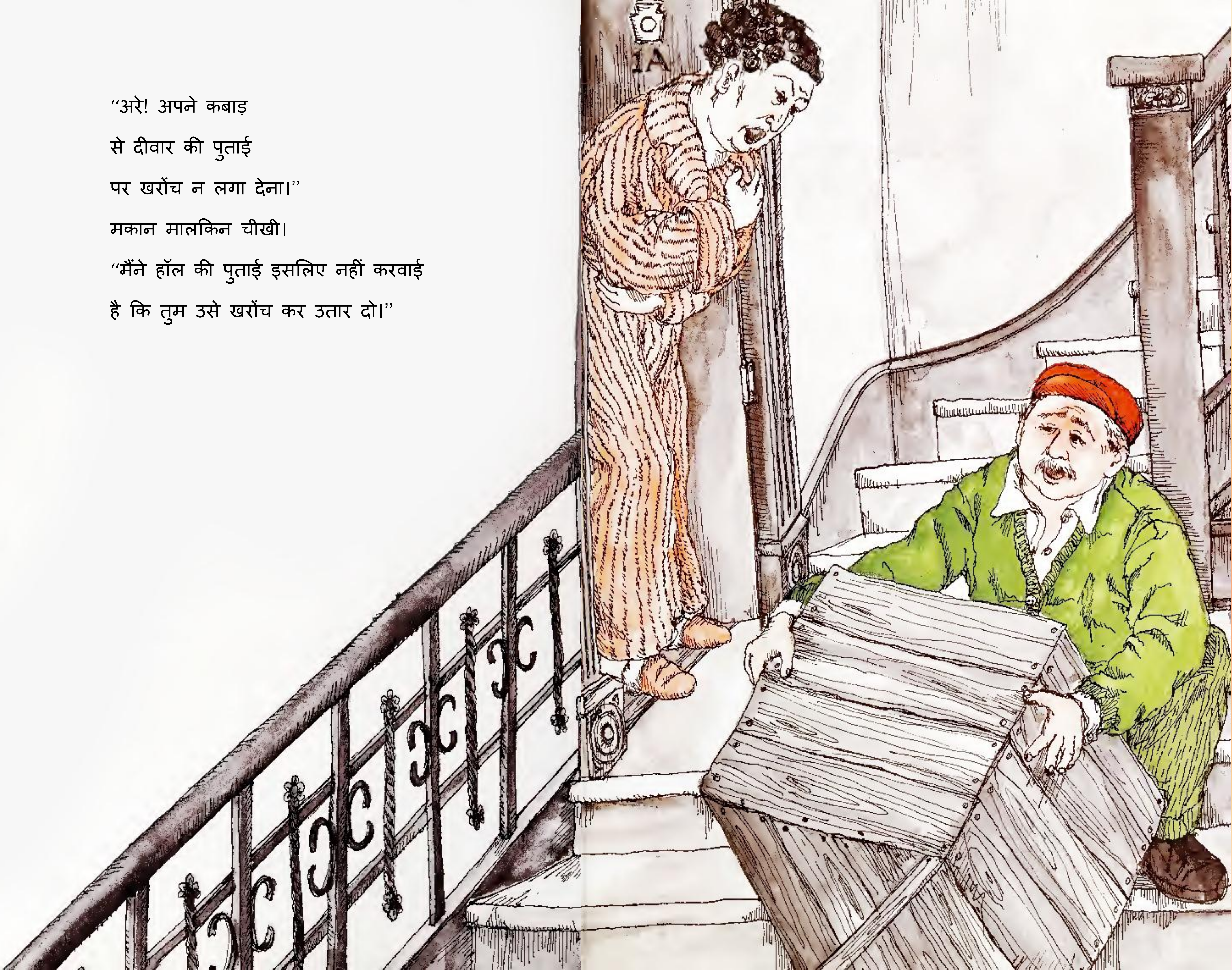
भाषान्तर पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरेलिन हिर्श की समृति में,
एक अच्छी दोस्त
और विलक्षण प्रतिभा।

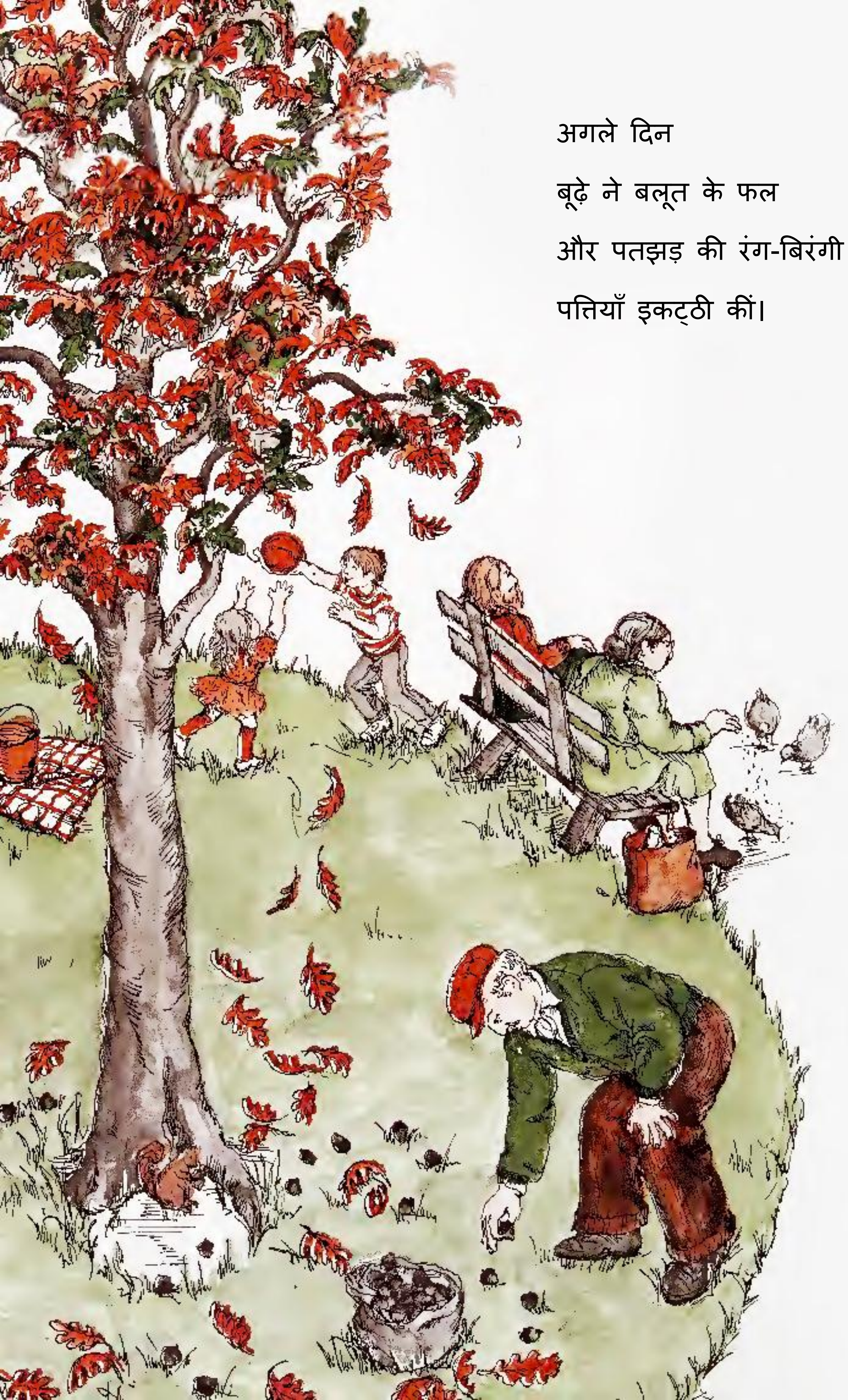


एक दिन फ्लैट 3 डी का बूढ़ा
एक बड़ा सारा
लकड़ी का खोखा,
अपने मकान की सामने वाली सीढ़ियों
से घसीटता लाया।

"अरे! अपने कबाड़
से दीवार की पुताई
पर खरोंच न लगा देना।"
मकान मालकिन चीखी।
"मैंने हॉल की पुताई इसलिए नहीं करवाई
है कि तुम उसे खरोंच कर उतार दो।"



अगले दिन
बूढ़े ने बलूत के फल
और पतझड़ की रंग-बिरंगी
पत्तियाँ इकट्ठी कीं।





जब वह अपने मकान तक पहुँचा
मालकिन अपनी खिड़की से चीखी,
“कुछ टपका न देना।
अगर कोई दूसरा उस पर पैर पड़ने से फिसले,
तो हर्जाना मुझे ही चुकाना होगा।”





बूढ़े ने पुरानी पत्रिकाएं इकट्ठी कीं
और मालकिन चीखी
''कूड़ा-करकट
और, और कूड़ा।
लोग इसे फेंकते हैं
और तुम हो कि इन्हें इकट्ठा करते हो।''
बूढ़े ने और खोखे इकट्ठे किए . . .



पुराने कपड़े . . .
खाली बोतलें . . .
और पेड़ों से गिरी टहनियाँ इकट्ठी कीं।
वह सब कुछ मकान में बने
अपने फ्लैट में लाता गया।
हर बार जब वह मकान की सामने वाली
सीढ़ियाँ चढ़ता
मकान मालकिन चीखती।





सप्ताह भर से भी ज़्यादा समय
बूढ़ा अपने छोटे से फ्लैट में
ठोकता-पीटता,
सीता-पिरोता और चमकाता रहा।



तब एक दिन
सूरज डूबता उसके पहले
बूढ़ा मकान से निकला।
वह सूट और गोल टोप पहने था।
मालकिन खिड़की के पास बैठी उसे घूरती रही।

तकरीबन घंटे भर बाद वह लौटा।
उसकी नातिन-पोते उसके साथ थे।
बूढ़ा उनसे बतिया और हंस रहा था।
बच्चे भी बतिया और हंस रहे थे।

वे बूढ़े के साथ
सामने की सीढ़ियाँ
चढ़ मकान में दाखिल हुए।

मालकिन उनके पीछे थी।



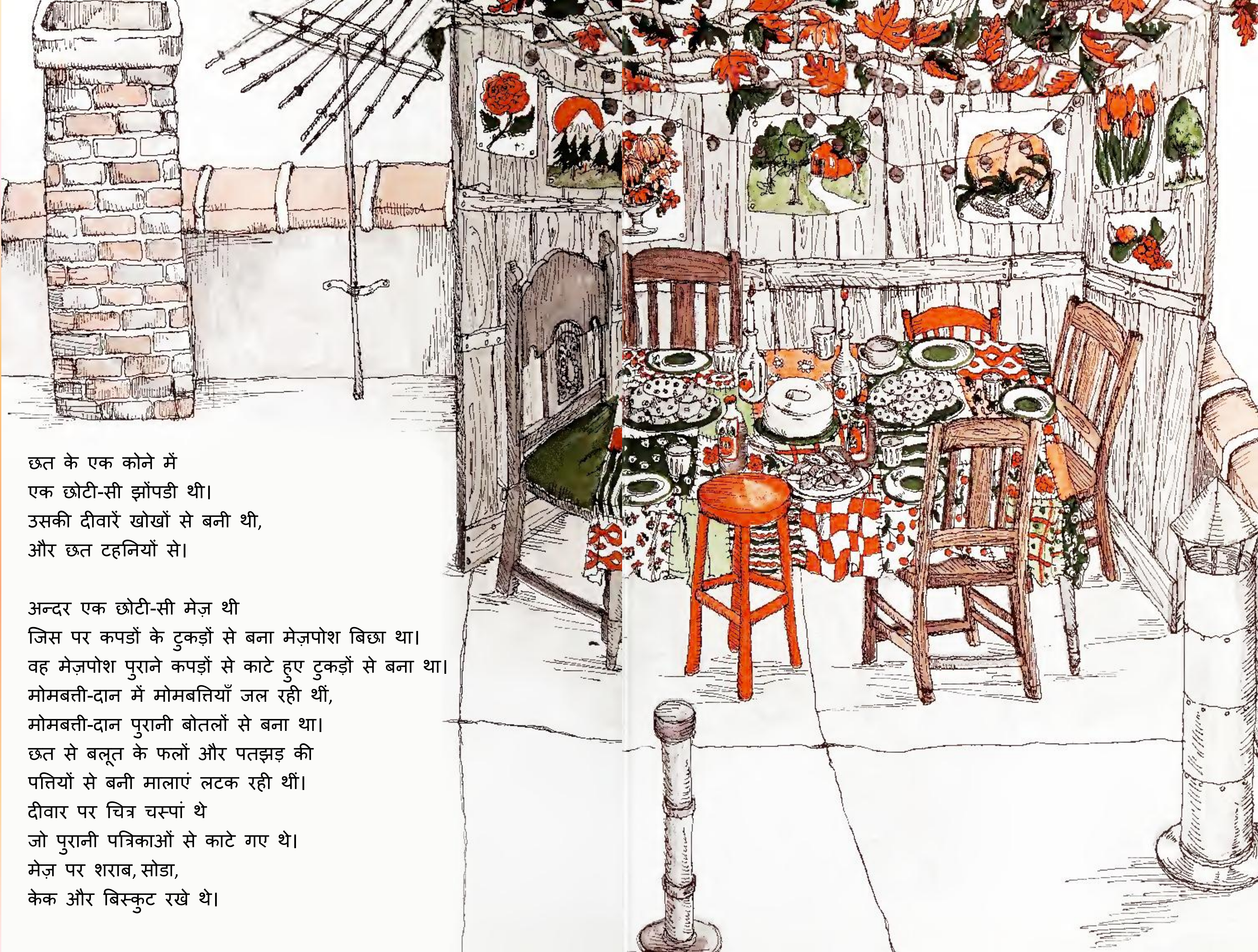




वे तीन मंज़िल चढ़े।

बूढ़े के फ्लैट के भी ऊपर,

ठेठ छत पर पहुँचे।



छत के एक कोने में
एक छोटी-सी झोंपडी थी।
उसकी दीवारें खोखों से बनी थी,
और छत टहनियों से।

अन्दर एक छोटी-सी मेज़ थी
जिस पर कपडों के टुकड़ों से बना मेज़पोश बिछा था।
वह मेज़पोश पुराने कपड़ों से काटे हुए टुकड़ों से बना था।
मोमबत्ती-दान में मोमबत्तियाँ जल रही थीं,
मोमबत्ती-दान पुरानी बोतलों से बना था।
छत से बलूत के फलों और पतझड़ की
पत्तियों से बनी मालाएं लटक रही थीं।
दीवार पर चित्र चस्पां थे
जो पुरानी पत्रिकाओं से काटे गए थे।
मेज़ पर शराब, सोडा,
केक और बिस्कुट रखे थे।

“अरे वाह!”

“कितना सुन्दर,”

बच्चे बोले।

“यह तो सबसे सुन्दर सोक्का (झोंपड़ी) है।

बूढ़ा मुस्कुराया।





बूढ़े ने शराब पी,

बच्चों ने सोड़ा

जिसमें ज़रा सी शराब मिली थी।

सबने केक और बिस्कुट खाए।





"दफ़ा हो जाओ!"

मकान मालकिन चीखी।

"मेरी छत से भगो!

मैंने तुम्हें फ्लैट किराए पर दिया है,

छत नहीं।

और अपना काठ-कबाड़ साथ लेते जाओ।"

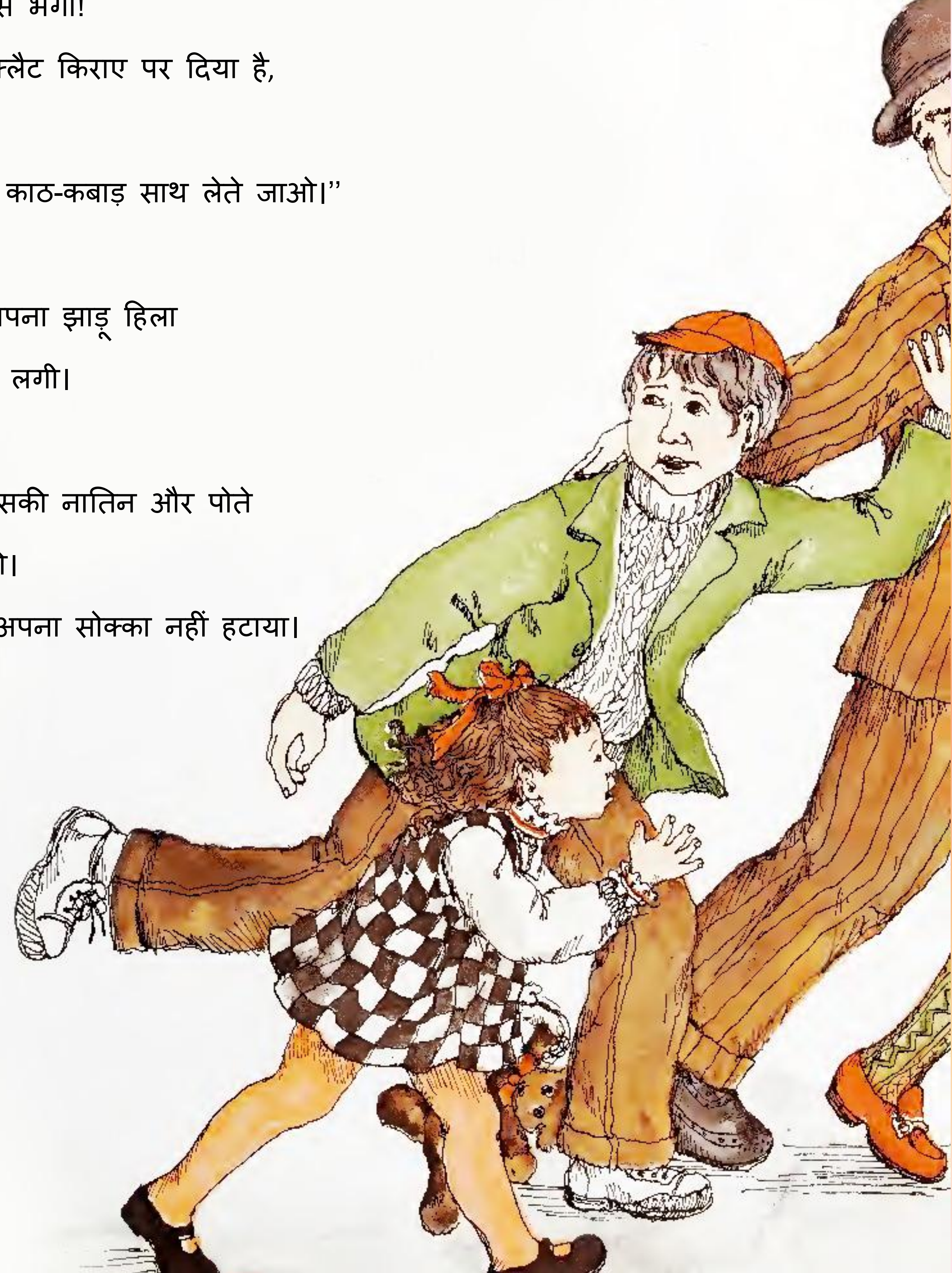
मालकिन अपना झाड़ू हिला

उन्हें भगाने लगी।

बूढ़ा और उसकी नातिन और पोते

छत से भागे।

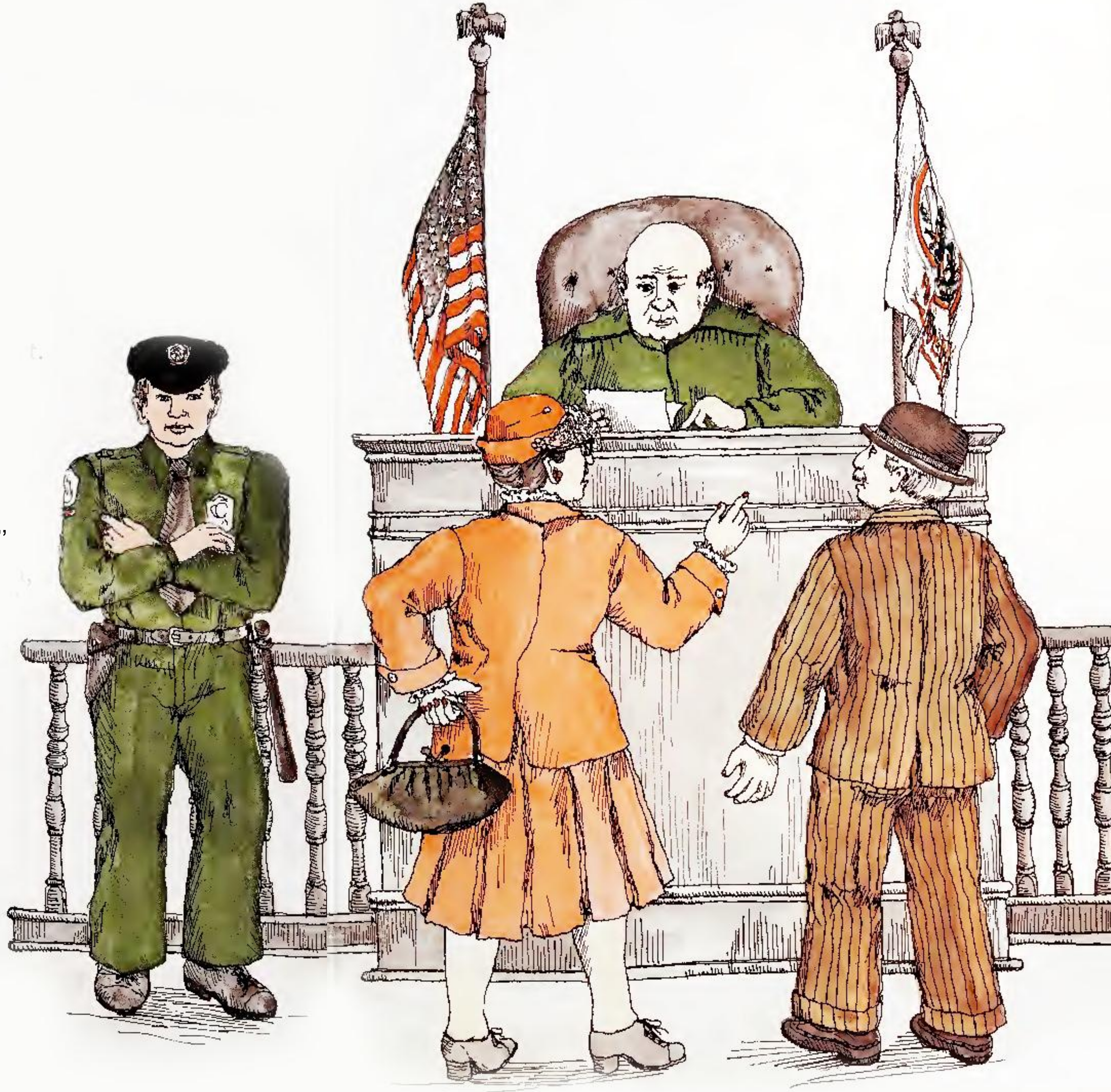
पर बूढ़े ने अपना सोक्का नहीं हटाया।



कुछ ही दिनों बाद
मकान मालकिन
बूढ़े को अदालत घसीट लाई।

"मकान मेरा है,
और छत भी मेरी है,"
उसने हाकिम से कहा।

"खैर,"
हाकिम ने बूढ़े से कहा,
"तो तुम्हें इस बारे में क्या कहना है।"





“हुज़ूर हाकिम साब,” बूढ़े ने जवाब दिया,
“हज़ारों साल पहले मेरे लोग मिस्र में गुलाम थे।
जब वे वहाँ से भाग रेगिस्तान में पहुँचे
उनके पास मकान बनाने का समय नहीं था।
वे आगे बढ़ जहाँ भी पहुँचते, अस्थायी झोपड़ियाँ बनाते।
हर पतझड़ हम सुकोट का जश्न मनाते हैं,
जिसमें हम वैसी झोंपड़ियाँ या सोक्का बनाते हैं,
जैसी उनकी हुआ करती थीं।
मैंने भी यही किया था।
अगले चार दिनों बाद यह जश्न ख़त्म हो जाएगा।
मैं अर्ज़ करता हूँ कि मुझे मेरा सुकोट
बस तब तक रखने दिया जाए।”



हाकिम ने सोचा, और सोचा।
तब वह मालकिन से मुख़ातिब हुआ,
"आप सही कह रहीं थीं,"
हाकिम ने कहा,
"मकान आपका है,
और बिना आपकी रज़ामन्दी लिए
छत पर कुछ बनाने की छूट किसीको नहीं है।"

तब हाकिम ने
बूढ़े से कहा,
"मैं आपको दस दिन देता हूँ।
इस बीच आप सुकोट हटा लें।
हाकिम मुस्कुराया।



“दस दिन!”

बूढ़े ने सोचा।

तब वह भी मुसकुराया।



सुकोट यहूदियों के मूल्य हाक्नसाट औरखम, यानी अपने घर में मेहमानों का स्वागत और मनोरंजन करना को दर्शाता है। इस कहानी का बूढ़ा अपनी सख़्त मकान मालकिन के बावजूद अपनी नातिन और पोतों के लिए एक खुशनुमा सोक्का बनाता है। वह उसकी शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं देता, पलट कर जवाब भी नहीं देता। तब भी नहीं जब वह झाड़ू उठा बूढ़े और उसके नातिन-पोतो का भगाने लगती है।

$/9

